

कोविड-19 के विरुद्ध सीसीआरएस की पहल

इसमें कोई संदेह नहीं है कि कोविड-19 बीमारी एक महामारी का रूप ले चुकी है तथा एक अभूतपूर्व वैश्विक सार्वजनिक स्वास्थ्य चिंता का विषय बन कर उभरी है। सामाजिक दूरी, मास्क का उपयोग तथा अन्य कोविड-19 प्रोटोकाल का बड़े स्तर पर पालन होने के बावजूद भी यह महामारी काफी तेजी से फैली है। परस्पर निर्भरता, विविध संस्कृति, परंपरा, भाषा तथा त्योहारों वाला देश होने के कारण तथा तदनुसार सामाजिक समारोहों के अधिक अवसर होने के कारण भारत में भी यह महामारी तेजी से फैली है। कोविड-19 की इस वर्तमान चुनौती को बहु-आयामी दृष्टिकोण के माध्यम से संबोधित करने की आवश्यकता है, जिसमें चिकित्सीय हस्तक्षेपों के अन्वेषण के अलावा सक्रिय रोगनिरोधी उपायों पर समान जोर दिया जाना चाहिए जो महामारी के प्रसार को नियंत्रित करने के लिए मौजूदा चिकित्साओं की तुलना में बेहतर उत्तरजीविता और रोगनिरोध के विश्वस्तरीय आयाम पेश कर सके। वर्तमान परिस्थितियों में यह आवश्यक हो गया है कि आयुर्वेद की निवारक, उपचारात्मक और स्वास्थ्य संवर्धन का सर्वोत्तम उपयोग सुनिश्चित किया जाए ताकि इस महामारी से बचाव, सक्रिय प्रबंधन तथा साथ ही पोस्ट-कोविड-19 दुष्प्रभावों के प्रबंधन हेतु बेहतर परिणाम की अपेक्षा संभव हो सके।

सेलुलोजेनेसिस की अवधारणा, जो कि स्वास्थ्य के अस्तित्व की ओर ध्यान केन्द्रित करती है, को स्वास्थ्य की आयुर्वेदिक आवधारणा के संदर्भ में भी प्रयुक्त किया जा सकता है और संप्राप्ति विघटन (एटियोपैथोजेनिक तंत्र का विघटन) और सिद्धांत, कोविड देखभाल में उपयोग किया जा सकता है।

प्रमाण-आधारित अनुसंधान के इस युग में, परिषद ने कोविड-19 अनुसंधान में समुदाय आधारित आयुर्वेदिक रोगनिरोधी देखभाल के माध्यम से उच्च जोखिम वाली जनसंख्या में तथा GCP का पालन करते हुए गैर-रेण्डमाइज़्ड और रेण्डमाइज़्ड नियंत्रित नैदानिक परीक्षणों के माध्यम से आयुर्वेदिक फॉर्मूलेशन्स की आंतरिक होमियोस्टेसिस और बल (जन्मजात प्रतिरक्षा) को विनियमित करने हेतु उपयोगिता का मूल्यांकन करने के लिए शोध किया है। इनमें कोविड-19 के प्रबंधन में आयुष-64, च्यवनप्राश और गुडुची घनवटी आदि की उपयोगिता के अध्ययन शामिल हैं।

आयुष मंत्रालय ने कोविड-19 के प्रबंधन में चयनित आयुर्वेदिक चिकित्साओं की प्रभावकारिता और सुरक्षा को प्रदर्शित करने के लिए विभिन्न नैदानिक परीक्षणों को डिजाइन, निष्पादित और मॉनिटर करने के लिए एक अंतःविषय कार्य-बल का गठन किया था। इन अध्ययनों को विभिन्न संस्थानों यथा केजीएमयू, लखनऊ; बीएमसी कोविड सेंटर, मुंबई; डीएमआईएमएस विश्वविद्यालय, वर्धा, आदि के सहयोग से निष्पादित किया जा रहा है और अंतरिम रुझान नियंत्रण समूहों की तुलना में अध्ययन समूहों में बिना किसी मृत्यु दर अथवा प्रतिकूल औषधि प्रतिक्रियाओं के प्रारंभिक नैदानिक उपचार दर दर्शाते हैं।

समुदाय आधारित अध्ययनों को देश के विभिन्न कंटेनमेंट क्षेत्रों में निष्पादित किया गया और प्रोफाइलेक्टिक अध्ययन भी उच्च जोखिम वाली जनसंख्या जैसे कि भारत में विभिन्न स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं में कार्यरत स्वास्थ्य देखभाल कर्मियों पर किया गया तथा अंतरिम विश्लेषण रिपोर्ट आशाजनक सुरक्षात्मक क्षमता दर्शाती है। आणविक इंटरैक्शन के तंत्र और इसके बाइंडिंग मोड का पता करने के लिए आयुष-64 का आणविक डॉकिंग एनआईएन, हैदराबाद, के सहयोग से भी किया गया है।

परिषद ने प्रोफाइलेक्टिक और चिकित्सीय अनुसंधान मोड में अब तक कुल 23 अध्ययन किए हैं और इन अध्ययनों से दो लाख से अधिक लोग लाभान्वित हुए हैं। भारत में आयुर्वेद में अनुसंधान के लिए शीर्ष संस्थान होने के नाते, परिषद ने कई अन्य आयुर्वेद संस्थानों जैसे कि पंडित खुशीलाल सरकारी आयुर्वेदिक महाविद्यालय, भोपाल; श्री घन्तंरि आयुर्वेदिक महाविद्यालय आदि को कोविड-19 में नैदानिक अनुसंधान करने के लिए तकनीकी सहायता प्रदान की है।

यह आशा की जाती है कि नैदानिक अनुसंधान की मात्रा और गुणवत्ता में वृद्धि और सृजित साक्ष्य हमें कोविड-19 में प्रोफाइलेक्सिस और चिकित्सा के क्षेत्र में आयुर्वेद की क्षमता को समझने में सहायक होंगे।



प्रो. वैद्य करतार सिंह धीमान

मुख्य सम्पादक

आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान पत्रिका

महानिदेशक

केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद्

आयुष मंत्रालय, भारत सरकार

नई दिल्ली, भारत

CCRAS Initiatives against COVID-19 Pandemic

COVID-19 has emerged as the latest pandemic and is of an unprecedented global public health concern. Being a country and population that thrives on interdependence, within families, relatives and friends and with more chance to numerous religious, cultural and social gatherings, the disease has spread rapidly despite the norms for social distancing and affecting all states with significant impact on the economy and health care. This current challenge of COVID-19 pandemic needs to be addressed through a multi-pronged approach, with equal emphasis on active prophylactic measures besides exploring therapeutic interventions that would offer better survival and better prognosis than the existing interventions to control the spread of the pandemic. It is imperative that the capacity of Ayurveda is fully harnessed to ensure maximum use of its preventive, curative and rejuvenative potential to manage the pre- and post-exposure prophylaxis, active management of the disease and also to offer better outcomes in post-COVID-19 sequel.



The concept of Salutogenesis that focuses on the origins of what creates health (strengths and resources) and focuses attention toward the development of an effective state of health despite the health-disease continuum stresses on successful coping with any physical or psychological stressors can also be applied in terms of Ayurvedic concept of *Swasthya* (health and wellness) and *Samprapthivighatana* (disruption of etiopathogenic mechanism) and the principle may be utilized in COVID care. In this era of evidence-based research, the Council has ventured into COVID-19 research through community-based Ayurvedic prophylactic care in high-risk population and also through non-randomized and randomized controlled clinical trials adhering to good clinical practice to scientifically evaluate usefulness of Ayurvedic formulations with potential to regulate the internal homeostasis and *Bala* (innate immunity) like *Ayush-64*, *Chyavanprash* and *Guduchi Ghan Vati*, etc. in the management of COVID-19. The AYUSH ministry constituted an interdisciplinary task force to design, execute and monitor various clinical trials to demonstrate the efficacy and safety of selected Ayurvedic interventions in the management of COVID-19. These studies are being executed in collaboration with various institutes such as KGMU, Lucknow; BMC COVID centre, Mumbai; DMIMS University, Wardha, etc. and the interim trends show early clinical cure rate in study groups compared to control groups, with no mortality or adverse drug reactions.

The community-based studies were executed at various containment zones of the country and prophylactic studies were also done in the high-risk population such as healthcare workers at different healthcare facilities in India and the interim analysis reports depicts promising protective potential. Molecular docking study of *Ayush-64* to determine the mechanism of molecular interaction and its binding mode, has also been conducted in collaboration with NIN, Hyderabad.

So far, the Council has taken up a total 23 studies in prophylactic and therapeutic research mode till date and more than two lakh people have benefitted through these studies. Being the apex institute for research in Ayurveda in India, the Council has extended technical support to several other Ayurveda institutions such as Pt. Khushilal Govt. Ayurvedic College, Bhopal; Shri Dhanwantri Ayurvedic College, etc. to equip them to conduct clinical research in COVID-19.

It is expected that the increase in the quantum and quality of clinical research and the evidence generated would enable us to realize the potential of Ayurveda in the arena of prophylaxis and therapeutics in COVID-19.

Prof. Vaidya Kartar Singh Dhiman

Editor-in-Chief

Journal of Research in Ayurvedic Sciences

Director General

Central Council for Research in Ayurvedic Sciences

Ministry of AYUSH, Government of India

New Delhi, India